

- (g) मरता हूँ इस आवाज़ पे हरचन्द सर उड़ जाय
जल्लाद को लेकिन वो कहे जायें कि “हाँ और”
जल्लाद = executioner
- (h) लोगों को है खुशीद-ए-जहाँ ताब का धोका
हर रोज़ दिखाता हूँ मैं इक दाग-ए-निहाँ और
खुशीद = sun, ताब = power/courage, निहाँ = hidden
- (i) लेता, न अगर दिल तुम्हें देता, कोई दम चैन
करता, जो न मरता कोई दिन, आह-ओ-फुगाँ और
फुगाँ = clamour
- (j) पाते नहीं जब राह, तो चड़ जाते हैं नाले
रुकती है मेरी तब'आ तो होती है रवाँ और
नाले = lamentation, तब'आ = temperament
- (k) हैं और भी दुनिया में सुखनवर बोहोत अच्छे
कहते हैं कि “ग़ालिब” का है अन्दाज़-ए-बयाँ और सुखनवर = poet
-

- (i) या शब को देखते थे कि हर गोशा-ए-बिसात
दामान-ए-बागबान-ओ-कफ़-ए-गुल-फ़रोश है
गोशा = corner, बागबान = gardener, कफ़ = sleeve, गुल-फ़रोश = florist
- (j) लुत्फ़-ए-ख़िराम-ए-साक़ी-ओ-जौक़-ए-सदा-ए-चंग
ये जन्नत-ए-निगाह वो फ़िर्दौस-ए-गोश है
ख़िराम = speed, जौक़ = taste, सदा = sound, चंग = lute, फ़िर्दौस = paradise, गोश = ear
- (k) या सुभ दम जो देखिये आकर तो बज्म में
नै वो सुरूर-ओ-सोज़ न जोश-ओ-ख़रोश है
सुरूर = pleasure, सोज़ = passion/heat
- (l) दाग़-ए-फ़िराक़-ए-सोहबत-ए-शब की जली हुई
इक शम्मा रह गई है सो वो भी ख़ामोश है
फ़िराक़ = separation, सोहबत = company
- (m) आते हैं ग़ैब से ये मज्जामीं ख़याल में
“ग़ालिब”, सरीर-ए-ख़ामा नवा-ए-सरोश है
ग़ैब = hidden/mysterious, मज्जामीं = topics, सरीर = scratching sound made by a pen,
ख़ामा = pen, नवा = sound, सरोश = angel

37. (a) है बस कि हर इक उनके इशारे में निशाँ और
करते हैं मुहोब्बत तो गुज़रता है गुमाँ और
गुमाँ = doubt/suspicion
- (b) यारब ! वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात
दे और दिल उनको, जो न दे मुझको जुबाँ और
- (c) आबू से है क्या उस निगाह-ए-नाज़ को पैवन्द
है तीर मुकर्रर मगर उसकी है कमाँ और
आबू = eyebrow, पैवन्द = patch
- (d) तुम शहर में हो तो हमें क्या ग़म ? जब उठेंगे
ले आयेंगे बाज़ार से जाकर दिल-ओ-जाँ और
- (e) हरचन्द सुबक-दस्त हुए बुत-शिकनी में
हम हैं, तो अभी राह में है संग-ए-गिराँ और
सुबक-दस्त (or सबुक-दस्त both are correct) = expert, बुत-शिकनी = iconoclast, संग = stone,
गिराँ = heavy
- (f) है खून-ए-जिगर जोश में दिल खोल के रोता
होते कई जो दीदा-ए-खूनाबा-फ़िशाँ और
दीदा = eye, खूनाबा = mixture of blood and water, फ़िशाँ = shed /spread,
खूनाबा = (खूँ = blood) + (आब = water), खूनाबा-फ़िशाँ = to sheds tears of blood

(j) कहा तुमने कि “क्यों हो गैर के मिलने में रुस्वाई ?”
बजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि “हाँ क्यों हो ?”
रुस्वाई = disgrace, बजा = right/correct

(k) निकाला चाहता है काम क्या ता'अनों से तू “गालिब”
तेरे बे-मेहर कहने से वो तुझ पर मेहरबाँ क्यों हो ?
ता'अना = taunter, बे-मेहर = unkind/repulsive

-
36. (a) जुल्मत-कदे में मेरे शब-ए-गम का जोश है
इक शम्म'आ है दलील-ए-सहर, सो खमोश है
जुल्मत = darkness, दलील = proof, सहर = morning
- (b) नै मुज्दा-ए-विसाल न नजारा-ए-जमाल
मुदत हुई कि आशती-ए-चश्म-ओ-गोश है
मुज्दा = good news, विसाल = meeting, नजारा-ए-जमाल = seeing a beautiful face,
आशती = harmony/friendship/peace, चश्म = eye, गोश = ear
- (c) मय ने किया है, हुस्न-ए-खुद-आरा को बे-हिजाब
'ए शौक्र, याँ इजाजत-ए-तस्लीम-ए-होश है
मय = bar, खुद-आरा = self adorer, हिजाब = veil, तस्लीम = greeting
- (d) गौहर को इक्द-ए-गर्दन-ए-खुबाँ में देखना
क्या औज पर सितारा-ए-गौहर-फ़रोश है
गौहर = pearl/gem, इक्द-ए-गर्दन = necklace, खुबाँ = a beautiful person/sweetheart,
औज = highest point/summit, फ़रोश = merchant
- (e) दीदार, वादा, हौसला, साक्री, निगाह-ए-मस्त
बज्म-ए-खयाल मैकदा-ए-बे-खरोश है
दीदार = appearance, बे-खरोश = quite/dead
- (f) 'ए ताज्जा वारिदान-ए-बिसात-ए-हवा-ए-दिल
जिन्हार गर तुम्हें हवस-ए-ना-ओ-नोश है
वारिदान = arrivals, बिसात = chess, हवा = desire/greed, जिन्हार = be warned !,
हवस = lust/greed, ना-ओ-नोश = feasting/drinking
- (g) देखो मुझे जो दीदा-ए-इब्रत-निगाह हो
मेरी सुनो जो गोश-ए-नसीहत-नियोश है
दीदा = sight, इब्रत = admonition, गोश = ear, नसीहत = advice, नियोश = listener
- (h) साक्री बा-जल्वा दुश्मन-ए-इमान-ओ-आगही
मुत्रिब बा-नरमा रहजन-ए-तम्कीन-ओ-होश है
आगही = wisdom, मुत्रिब = singer, रहजन = robber, तम्कीन = authority/power

- (j) मैंने मजनूँ पे लड़कपन में “असद”
संग उठाया था कि सर याद आया
संग = stone

-
35. (a) किसी को दे के दिल कोई नवा-सन्ज-ए-फुगाँ क्यों हो ?
न हो जब दिल ही सीने में तो फिर मुँह में जुबाँ क्यों हो ?
नवा-सन्ज = singer, फुगाँ = clamour
- (b) वो अपनी खू न छोड़ेंगे, हम अपनी वज्र'आ क्यों बदलें ?
सुबक-सर बनके क्या पूछें कि हम से सर-गिराँ क्यों हो ?
खू = habit, वज्र'आ = conduct/behaviour, सुबक-सर = light headed/ unsteady,
सर-गिराँ = arrogant/proud
- (c) किया गम-रूवार ने रुस्वा, लगे आग इस मुहब्बत को
न लाये ताब जो गम की, वो मेरा राजदाँ क्यों हो ?
गम-रूवार = comforter, ताब = courage/patience, राजदाँ = friend
- (d) वफ़ा कैसी ? कहाँ का इश्क़ ? जब सर फोड़ना ठेहरा
तो फिर 'ए संग-दिल तेरा ही संग-ए-आस्ताँ क्यों हो ?
संग-दिल = hard hearted/merciless, संग-ए-आस्ताँ = threshold
- (e) क़फ़स में मुझ से रूदाद-ए-चमन कहते न डर हमदम
गिरी है जिस पे कल बिजली वो मेरा आशियाँ क्यों हो ?
क़फ़स = cage/prison, रूदाद = report/statement
- (f) ये कह सकते हो “हम दिल में नहीं हैं” पर ये बतलाओ
कि जब दिल में तुम्ही-तुम हो तो आँखो से निहाँ क्यों हो ?
निहाँ = hidden
- (g) ग़लत है जज़्बा-ए-दिल का शिक्वा, देखो जुर्म किसका है
न खींचो गर तुम अपने को, कशाकश दर्मियाँ क्यों हो ?
जज़्बा = desire/feeling, शिक्वा = complaint, कशाकश = struggle/dilemma, दर्मियाँ = between
- (h) ये फ़ितना आदमी की ख़ाना-वीरानी को क्या कम है ?
हुए तुम दोस्त जिसके, दुश्मन उसका आस्माँ क्यों हो ?
फ़ितना = quarrel, ख़ाना-वीरानी = ruining of home
- (i) यही है आजमाना तो सताना किस को कहते हैं ?
'अदू के हो लिये जब तुम तो मेरा इम्तिहाँ क्यों हो ?
'अदू = enemy, इम्तिहाँ = examination

- (h) की मेरे क़त्ल के बाद उसने जफ़ा से तौबा
हाय उस ज़ूद-पशेमाँ का पशेमाँ होना
जफ़ा = oppression, ज़ूद = quickly, पशेमाँ = ashamed/embarrassed
- (i) हैफ़ उस चार गिरह कपड़े की क़िस्मत “ग़ालिब”
जिस की क़िस्मत में हो आशिक़ का गिरेबाँ होना
हैफ़ = alas!, गिरह = one sixteenth of a yard, गिरेबाँ = collar
-

34. (a) फ़िर मुझे दीदा-ए-तर याद आया
दिल जिगर तश्ना-ए-फ़रियाद आया
दीदा-ए-तर = wet eyes, तश्ना (or तिश्ना) = thirsty
- (b) दम लिया था न क़यामत ने हनोज़
फ़िर तेरा वक़्त-ए-सफ़र याद आया
हनोज़ = yet/still
- (c) सादगी हाय तमन्ना, यानी
फ़िर वो नै-रंग-ए-नज़र याद आया
नै-रंग = fascinating
- (d) उज़्र-ए-वामाँदगी 'ए हसरत-ए-दिल
नाला करता था जिगर याद आया
उज़्र = excuse, वामाँदगी = tiredness
- (e) ज़िन्दगी यों भी गुज़र ही जाती
क्यों तेरा राहूगुज़र याद आया ?
- (f) क्या ही रिज़्वाँ से लड़ायी होगी
घर तेरा खुल्द में गर याद आया
रिज़्वाँ = doorkeeper of paradise, खुल्द = heaven/paradise
- (g) आह वो ज़ुरत-ए-फ़रियाद कहाँ
दिल से तंग आके जिगर याद आया
ज़ुरत = courage/valour
- (h) फ़िर तेरे कूचे को जाता है ख़याल
दिल-ए-गुमग़श्ता मगर याद आया
कूचा = a narrow street/lane, गुमग़श्ता = missing
- (i) कोई वीरानी-सी-वीरानी है
दश्त को देख के घर याद आया
दश्त = desert

- (n) इक नौ-बहार-ए-नाज को ताके है फिर निगाह
चहरा फुरोग-ए-मय से गुलिस्ताँ किये हुए
नौ-बहार-ए-नाज = lover, फुरोग = light/bright
- (o) फिर जी में है कि दर पे किसी के पड़े रहें
सर जर-ए-बार-ए-मिन्नत-ए-दरबाँ किये हुए
जर = money/wealth, बार = burden/load, मिन्नत = supplicate
- (p) जी ढूँढ़ता है फिर वोही फुर्सत के रात दिन
बैठे रहें तसव्वुर-ए-जानाँ किये हुए
तसव्वुर = imagination
- (q) “गालिब” हमें न छेड़ कि फिर जोश-ए-अशक से
बैठे हैं हम तहय्या-ए-तूफ़ाँ किये हुए
तहय्या = determined

33. (a) बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना
आदमी को भी मुयस्सर नहीं इन्साँ होना
दुश्वार = difficult, मुयस्सर = possible
- (b) गिरिया चाहे है खराबी मेरे काशाने की
दर-ओ-दीवार से टपके है बयाबाँ होना
गिरियाँ = weeping, काशाना = house, बयाबाँ = wilderness
- (c) वा-ए-दीवानगी-ए-शौक, के हर दम मुझको
आप जाना उधर और आप ही हैराँ होना
- (d) जल्वा अज-बस की तकाजा-ए-निगाह करता है
जौहर-ए-आइना भी चाहे है मिशगाँ होना
अज = from/then/by, जौहर = skill/knowledge, मिशगाँ = eyelid
- (e) इश्रत-ए-कत्ल-गह-ए-’एहल-ए-तमन्ना मत पूछ
ईद-ए-नजारा है शमशीर का उरियाँ होना
इश्रत = joy/delight, शमशीर = sword, उरियाँ = naked/bare
- (f) ले गये खाक में हम दाग-ए-तमन्ना-ए-निशात
तू हो और आप बा-सद-रंग-ए-गुलिस्ताँ होना
निशात (or नशात) = enthusiasm/happiness, सद-रंग = hundred colours
- (g) इश्रत-ए-पारा-ए-दिल, जख्म-ए-तमन्ना-खाना
लज्जत-ए-रीश-ए-जिगर गर्क-ए-नमकदाँ होना
इश्रत = joy/delight, पारा = fragment/piece, लज्जत = taste, रीश = wound, गर्क = drown/sink,
नमकदाँ = container to keep salt

(c) फ़िर वज्र'आ-ए-'एहतियात से रुकने लगा है दम
बरसों हुए हैं चाक गिरेबाँ किये हुए

वज्र'आ = conduct/behaviour, 'एहतियात = care, चाक = torn, गिरेबाँ = collar

(d) फ़िर गर्म-नाला हाय शरर-बार है नफ़स
मुदत हुई है सैर-ए-चिरागाँ किये हुए

शरर-बार = raining sparks of fire, नफ़स = breath

(e) फ़िर पुसिंश-ए-जराहत-ए-दिल को चला है इश्क
सामान-ए-सद-हज़ार नमकदाँ किये हुए

पुसिंश = enquiry, जराहत (or जिराहत) = surgery, सद = hundred,
नमकदाँ = container to keep salt

(f) फ़िर भर रहा है खामा-ए-मिशगाँ बा-खून-ए-दिल
साज-ए-चमन-तराजी-ए-दामाँ किये हुए

खामा = pen, मिशगाँ = eyelid, साज = disposition, तराजी = consenting

(g) बा-हम-दिगर हुए हैं दिल-ओ-दीदा फ़िर रक़ीब
नज़ारा-ओ-खयाल का सामाँ किये हुए

हम-दिगर = mutual/in between, सामाँ = confront

(h) दिल फ़िर तवाफ़-ए-कू-ए-मलामत को जाए है
पिन्दार का समन-कदा वीराँ किये हुए

तवाफ़ = circuit, कू = lane/street, मलामत = rebuke/blame, पिन्दार = pride/arrogance,
समन-कदा = house of jasmine flowers, here it means temple

(i) फ़िर शौक कर रहा है ख़रीदार की तलब
अर्ज-ए-मत'आ-ए-'अक़ल-ओ-दिल-ओ-जाँ किये हुए

तलब = search, मत'आ = valuables

(j) दौड़े है फ़िर हरेक गुल-ओ-लाला पर खयाल
सद-गुल-सिताँ निगाह का सामाँ किये हुए

(k) फ़िर चाहता हूँ नामा-ए-दिलदार खोलना
जाँ नज़-ए-दिल-फ़रेबी-ए-उन्वाँ किये हुए

नामा-ए-दिलदार = love letter, उन्वाँ = title/preface

(l) माँगे है फ़िर किसी को लब-ए-बाम पर हवस
जुल्फ़-ए-सियाह रुख़ पे परेशाँ किये हुए

लब-ए-बाम = the corner of a terrace, सियाह = black/dark

(m) चाहे फ़िर किसी को मुक़ाबिल में आरजू
सूरमे से तेज़ दश्ना-ए-मिशगाँ किये हुए

मुक़ाबिल = confronting, दश्ना = dagger, मिशगाँ = eyelids

- (b) दैर नहीं, हरम नहीं, दर नहीं, आस्ताँ नहीं
बैठे हैं रेहूगुज़र पे हम, ग़ैर हमें उठाये क्यों ?
दैर = temple, हरम = mosque, दर = gate, आस्ताँ = abode, रेहूगुज़र = path/way
- (c) जब वो जमाल-ए-दिल-फ़रोज़, सूरत-ए-मेहेर-ए-नीम-रोज़
आप ही हो नज़ारा-सोज़, पर्दे में मुँह छुपाये क्यों ?
जमाल = beauty, फ़रोज़ = shining/luminous, मेहेर = sun, नीम-रोज़ = mid day,
नज़ारा-सोज़ = beautiful/worth seeing
- (d) दशना-ए-गम्ज़ा जाँ-सिताँ, नावक-ए-नाज़ बे-पनाह
तेरा ही अक्स-ए-रुख़ सही, सामने तेरे आये क्यों ?
दशना = dagger, गम्ज़ा = amorous glance, जाँ-सिताँ = distroying life,
नावक = a kind of arrow, अक्स = image
- (e) कैद-ए-हयात-ओ-बन्द-ए-गम अस्तल में दोनो एक हैं
मौत से पहले आदमी गम से नजात पाये क्यों ?
हयात = life, बन्द-ए-गम = concealed/hidden sorrows, नजात = release/liberation
- (f) हुस्न और उसपे हुस्न-जन रह गयी बुलहवस की शर्म
अपने पे 'एतमाद है, ग़ैर को आजमाये क्यों ?
हुस्न-जन = favourable view, बुलहवस = slave of passions/very greedy, 'एतमाद = reliance/dependance
- (g) वाँ वो गुरूर-ए-इज़ा'ज़-ओ-नाज़ याँ ये हिजाब-ए-पास-ए-वज़'आ
राह में हम मिले कहाँ, बज़्म में वो बुलाये क्यों ?
गुरूर = pride, इज़ा'ज़-ओ-नाज़ = respect and beauty, हिजाब = veil/modesty, पास = regard,
वज़'आ = behaviour
- (h) हाँ वो नहीं खुदा-परस्त, जाओ वो बे-वफ़ा सही
जिसको हो दीन-ओ-दिल 'अज़ीज़, उसकी गली में जाये क्यों ?
परस्त = worshipper, दीन = religion/faith
- (i) "ग़ालिब"-ए-ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बन्द हैं ?
रोइये ज़ार-ज़ार क्या, कीजिये हाय-हाय क्यों ?
ख़स्ता = sick/injured, ज़ार-ज़ार = bitterly

32. (a) मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किये हुए
जोश-ए-क़दाह से बज़्म चिरागाँ किये हुए
क़दाह = goblet

(b) करता हूँ जम'आ फिर जिगर-ए-लख़्त-लख़्त को
अर्सा हुआ है दावत-ए-मिशगाँ किये हुए
लख़्त = piece, मिशगाँ = eyelid

30. (a) इश्क़ मुझको नहीं, वेहशत ही सही
मेरी वेहशत, तेरी शोहरत ही सही
वेहशत = solitude, शोहरत = fame
- (b) क़त'आ कीजे न त'अल्लुक़ हम से
कुछ नहीं है तो 'अदावत ही सही
क़त'आ = break/intercept, त'अल्लुक़ = relation/connection, 'अदावत = hatred/animosity
- (c) मेरे होने में है क्या रुस्वाई ?
'ए वो मजलिस नहीं खलवत ही सही
मजलिस = assembly, खलवत = isolation
- (d) हम भी दुश्मन तो नहीं हैं अपने
ग़ैर को तुझ से मोहब्बत ही सही
- (e) अपनी हस्ती ही से हो, जो कुछ हो !
आगही गर नहीं ग़फ़्लत ही सही
हस्ती = existence, आगही = knowledge/information, ग़फ़्लत = negligence
- (f) 'उम्र हरचन्द के है बर्क़-ए-ख़िराम
दिल के खूँ करने की फ़ुर्सत ही सही
बर्क़ = lightning, ख़िराम = manner of walking
- (g) हम कोई तर्क़-ए-वफ़ा करते हैं
न सही इश्क़, मुसीबत ही सही
तर्क़ = relinquishment
- (h) कुछ तो दे 'ए फ़लक़-ए-ना-इन्साफ़
आह-ओ-फ़रियाद की रुख़सत ही सही
फ़लक़ = sky
- (i) हम भी तस्लीम की खूँ डालेंगे
बे-नियाज़ी तेरी 'आदत ही सही
तस्लीम = greeting/saluting, खूँ = habit, बे-नियाज़ी = independence
- (j) यार से छेड़ा चली जाए, "असद"
गर नहीं वस्ल तो हसरत ही सही
वस्ल = meeting, हसरत = desire

-
31. (a) दिल ही तो है न संग-ओ-ख़िशत दर्द से भर न आये क्यों ?
रोयेंगे हम हज़ार बार, कोई हमें सताये क्यों ?
संग = stone, ख़िशत = brick

- (f) क्यों न चीखूँ कि याद करते हैं
मेरी आवाज़ गर नहीं आती
- (g) दाग-ए-दिल गर नज़र नहीं आता
बू भी 'ए चारागर ! नहीं आती
चारागर = healer/doctor
- (h) हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी
कुछ हमारी खबर नहीं आती
- (i) मरते हैं आरजू में मरने की
मौत आती है पर नहीं आती
- (j) काब'आ किस मुँह से जाओगे "गालिब"
शर्म तुमको मगर नहीं आती

29. (a) नुक्ताचीं है गम-ए-दिल उसको सुनाये न बने
क्या बने बात जहाँ बात बनाये न बने
नुक्ताचीं = critic/sweetheart
- (b) मैं बुलाता तो हूँ उसको मगर 'ए जज्बा-ए-दिल
उसपे बन जाये कुछ 'ऐसी कि बिन आये न बने
- (c) खेल समझा है कहीं छोड़ न दे, भूल न जाय
काश ! यूँ भी हो कि बिन मेरे सताये न बने
- (d) गैर फिरता है लिये यूँ तेरे खत को कि अगर
कोई पूछे कि ये क्या है ? तो छिपाये न बने
- (e) इस नज़ाकत का बुरा हो, वो भले हैं तो क्या
हाथ आये तो उन्हें हाथ लगाये न बने
नज़ाकत = elegance
- (f) कह सके कौन कि ये जल्वा-गरी किसकी है
पर्दा छोड़ा है वो उसने कि उठाये न बने
जल्वा-गरी = manifestation
- (g) मौत की राह न देखूँ कि बिन आये न रहे
तुमको चाहूँ कि न आओ, तो बुलाये न बने
- (h) बोझ वो सर पे गिरा है कि उठाये न उठे
काम वो आन पड़ा है, कि बनाये न बने
- (i) इश्क पर जोर नहीं, है ये वो आतिश "गालिब"
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने
आतिश = fire

- (c) हम कहाँ किस्मत आजमाने जायें ?
तू ही जब खन्जर आजमा न हुआ
- (d) कितने शीरीं हैं तेरे लब ! कि रक्रीब
गालियाँ खाके बे-मजा न हुआ
शीरीं = sweet
- (e) है खबर गर्म उनके आने की
आज ही घर में बोरिया न हुआ !
बोरिया = mat, here it refers to groceries
- (f) क्या वो नामरूद की खुदाई थी
बन्दगी में तेरा भला न हुआ
नमरूद = an old king who used to say that he was God
- (g) जान दी, दी हुई उसी कि थी
हक़ तो ये है के हक़ अदा न हुआ
- (h) ज़रूम गर दब गया, लहू न थमा
काम गर रुक गया, रवाँ न हुआ
रवाँ = right/lawful
- (i) रहजनी है कि दिल-सितानी है ?
लेके दिल, दिल-सिताँ रवा न हुआ
दिल-सिताँ = lover, रवा = agree/admissible
- (j) कुछ तो पढ़िये कि लोग कहते हैं
'आज "गालिब" गज़लसरा न हुआ'

28. (a) कोई उम्मीद बर नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती
- (b) मौत का एक दिन मु'अय्यन है
नींद क्यों रात भर नहीं आती ?
मु'अय्यन = definite
- (c) आगे आती थी हाल-ए-दिल पे हंसी
अब किसी बात पर नहीं आती
- (d) जानता हूँ सवाब-ए-ता'अत-ओ-जहद
पर तबीयत इधर नहीं आती
सवाब = reward of good deeds in next life, ता'अत = devotion, जहद = religious deeds or duties
- (e) है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ
वर्ना क्या बात कर नहीं आती ?

- (b) छोड़ा न रश्क ने कि तेरे घर का नाम लूँ ?
हर एक से पूछता हूँ कि जाऊँ किधर को मैं ?
रश्क = jealousy
- (c) जाना पड़ा रक़ीब के दर पर हज़ार बार
'ए काश न तेरी रहगुज़र को मैं
रक़ीब = opponent, रहगुज़र = road/path
- (d) है क्या जो कस के बाँधिये मेरी बला दर'ए
क्या नहीं हूँ तुम्हारी कमर को मैं ?
- (e) लो वो भी कहते हैं कि ये बे-नंग-ओ-नाम है
ये अगर तो लुटाता न घर को मैं
- (f) चलता हूँ थोड़ी दूर हर इक तेज़ रौ के साथ
पेहचानता नहीं हूँ अभी राहबर को मैं
रौ = currents, राहबर = guide
- (g) ख़्वाहिश को 'अहम्कों ने परस्तिश दिया करार
क्या पूजता हूँ उस बुत-ए-बेदादगर को मैं ?
'अहम्क = fool/idiot, परस्तिश = worship, बुत = idol/lover, बेदादगर = cruel
- (h) फ़िर बे-खुदी में भूल गया राह-ए-कू-ए-यार
जाता वर्ना एक दिन अपनी ख़बर को मैं
बे-खुदी = rapture, कू-ए-यार = lover's street
- (i) अपने पे कर रहा हूँ क्रियास 'अहल-ए-दहर का
समझा हूँ दिल-पज़ीर मत'आ-ए-हुनर को मैं
क्रियास = supposition, 'अहल = people, दहर = period/era, पज़ीर = receiving, मत'आ = wealth,
हुनर = skill
- (j) "ग़ालिब" खुदा करे कि सवार-ए-समन्द-ए-नाज़
देखूँ 'अली-बहादुर-ए-आली-गुहर को मैं
सवार = ride, समन्द = horse, आली-गुहर = belonging to a high caste or a rich family

27. (a) दर्द मिन्नत-कश-ए-दवा न हुआ
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ
मिन्नत-कश-ए-दवा = obliged to medicine

- (b) जम'आ करते हो क्यों रक़ीबों का ?
इक तमाशा हुआ गिला न हुआ
रक़ीब = opponent, गिला = complaint

(k) ये मसाइल-ए-तसव्वुफ़, ये तेरा बयाँ “ग़ालिब” !

तुझे हम वली समझते, जो न बाद-ख़ार होता

मसाइल = topics, तसव्वुफ़ = mysticism, वली = prince/friend, बाद-ख़ार = boozier

25. (a) धोता हूँ जब मैं पीने को उस सीम-तन के पाँव
रखता है ज़िद से खींच के बाहर लगन के पाँव

सीम-तन = silver bodied, लगन = a basin

(b) दी सादगी से जान पड़ूँ कोहकन के पाँव
हैहात ! क्यों न टूट गये पीर्जन के पाँव

कोहकन = a mountain digger, हैहात = alas !, पीर्जन = old woman

(c) भागे थे हम बहुत सी उसकी सज़ा है ये
होकर असीर दाबते हैं राहज़न के पाँव

असीर = prisoner, राहज़न = robber

(d) मर्हम कि जुस्तजू में घिरा हूँ जो दूर-दूर
तन से सिवा फ़िगार है इस खस्ता-तन के पाँव

जुस्तजू = desire, फ़िगार = wounded

(e) अल्लाह रे जौक-ए-दशत-ए-नर्दी कि बाद-ए-मर्ग
हिलते हैं खुद-बा-खुद मेरे अन्दर क़फ़न के पाँव

जौक = taste, दशत-ए-नर्दी = to roam around in wilderness, मर्ग = death

(f) है जोश-ए-गुल बहार में याँ तक कि हर तरफ़
उडते हुए उलझते हैं मुर्ग-ए-चमन के पाँव

मुर्ग = bird

(g) शब को किसी के ख़ाब में आया न हो कहीं
दुखते हैं आज उस बुत-ए-नाज़ुक-बदन के पाँव

बुत = idol/beloved

(h) “ग़ालिब” मेरे कलाम में क्योंकर मज़ा न हो ?
पीता हूँ धोके खुसरौ-ए-शीरी-सुखन के पाँव

कलाम = writing/speech, शीरी = sweet, सुखन = speech/words,

खुसरौ-ए-शीरी-सुखन = this is pointed at Badshah Zafar

26. (a) हैराँ हूँ दिल को रो'ऊँ कि पीटूँ जिगर को मैं ?
मक़दूर हूँ तो साथ रखूँ नौहागर को मैं

मक़दूर = capable, नौहागर = mourner/lamentor

(h) मुज्महिल हो गये कुव'आ "गालिब"

वो अनासिर में 'एत्दाल कहाँ ?

मुज्महिल = exhausted/idle, कुव'आ = limbs, अनासिर = elements, 'एत्दाल = moderation

24. (a) ये न थी हमारी क्रिस्मत के विसाल-ए-यार होता
अगर और जीते रहेते यही इन्तेजार होता

विसाल-ए-यार = meeting with lover

(b) तेरे वादे पर जिये हम तो ये जान झूट जाना
के खुशी से मर न जाते अगर 'ऐतबार होता

'ऐतबार = trust/confidence

(c) तेरी नाजुकी से जाना कि बन्धा था 'एहेद-बूदा
कभी तू न तोड़ सकता अगर ऊस्तुवार होता

'एहेद = oath, ऊस्तुवार = firm/determined

(d) कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीर-ए-नीमकश को
ये खलिश कहाँ से होती जो जिगर के पार होता

तीर-ए-नीमकश = half drawn arrow, खलिश = pain

(e) ये कहाँ कि दोस्ती है के बने हैं दोस्त नासेह
कोई चारसाज होता, कोई गमगुसार होता

नासेह = councillor, चारसाज = healer, गमगुसार = sympathizer

(f) रग-ए-संग से टपकता वो लहू कि फिर न थमता
जिसे गम समझ रहे हो, ये अगर शरार होता

रग = nerve, संग = stone, शरार = flash/gleam

(g) गम अगर्चे जाँ-गुलिस है, पे कहाँ बचें के दिल है
गम-ए-इश्क गर न होता, गम-ए-रोजगार होता

जाँ-गुलिस = life threatening

(h) कहूँ किस से मैं के क्या है, शब-ए-गम बुरी बला है
मुझ क्या बुरा था मरना ? अगर एक बार होता

(i) हुए मर के हम जो रुस्वा, हुए क्यों न गर्क-ए-दरिया
न कभी जनाजा उठता, न कहीं मजार होता

गर्क = drown/sink

(j) उसे कौन देख सकता कि यगाना है वो यकता
जो दूई कि बू भी होती तो कहीं दो चार होता

यगाना = kinsman, यकता = matchless/incomparable, दूई = duality

- (d) कहता है कौन नाला-ए-बुलबुल को बे-असर
पर्दे में गुल के लाख जिगर चाक हो गये
चाक = slit/torn
- (e) पूछे है क्या वुजूद-ओ-अदम 'एहल-ए-शौक का
आप अपनी आग से खस-ओ-खाशाक हो गये
वुजूद = existence, अदम = non existence, खस-ओ-खाशाक = destroyed
- (f) करने गये थे उससे तगाफुल का हम गिला
कि एक ही निगाह कि बस खाक हो गये
तगाफुल = negligence, गिला = complaint, खाक = dust/ashes
- (g) इस ढंग से उठायी कल उसने "असद" की लाश
दुश्मन भी जिसको देखके गमनाक हो गये
गमनाक = grief stricken

23. (a) वो फिराक और वो विसाल कहाँ ?
वो शब-ओ-रोज-ओ-माह-ओ-साल कहाँ ?
फिराक = separation, विसाल = meeting, शब = night, रोज = day, माह = month, साल = year
- (b) फुर्सत-ए-कारोबार-ए-शौक किसे ?
जौक-ए-नजारा-ए-जमाल कहाँ ?
जौक = delight/joy, जमाल = beauty
- (c) दिल तो दिल वो दिमाग भी न रहा
शोर-ए-सौदा-ए-खत्त-ओ-खाल कहाँ ?
- (d) थी वो इक शरूस के तसव्वुर से
अब वो रानाइ-ए-खयाल कहाँ ?
तसव्वुर = imagination, रानाइ-ए-खयाल = tender thoughts
- (e) 'ऐसा आसाँ नहीं लहू रोना
दिल में ताकत जिगर में हाल कहाँ ?
हाल = spiritual ecstasy
- (f) हमसे छूटा क्रमार-खाना-ए-इश्क
वाँ जो जवै, गिरह में माल कहाँ ?
क्रमार-खाना = casino, गिरह = knot/joint
- (g) फ़िक्र-ए-दुनियाँ में सर खपाता हूँ
मैं कहाँ और ये वबाल कहाँ ?
वबाल = calamity

(g) जल्वा फिर अर्ज-ए-नाज करता है
रोज-ए-बाजार-ए-जाँ-सिपारी है

जल्वा = splendour, जाँ-सिपारी = resigning one's life into the hands of another

(h) फिर उसी बेवफ़ा पे मरते हैं
फिर वोही जिन्दगी हमारी है

(i) फिर खुला है दर-ए-अदालत-ए-नाज
गर्म बाजार-ए-फ़ौज-दारी है

दर = abode, फ़ौज-दारी = military court

(j) हो रहा है जहान में अंधेर
जुल्फ़ की फिर सरिश्ता-दारी है

सरिश्ता-दारी = a regulator's position

(k) फिर किया पारा-ए-जिगर ने सवाल
एक फ़रियाद-ओ-आह-ओ-जारी है

पारा = fragment

(l) फिर हुए हैं गवाह-ए-इश्क़ तलब
अश्क़-बारी का हुक़म-जारी है

तलब = search/desire/request, अश्क़-बारी = lamentation

(m) दिल-ओ-मिशगाँ का जो मुक़दमा था
आज फिर उसकी रूब-कारी है

मिशगाँ = eyelids, रूब-कारी = to put the mind into work

(n) बे-खुदी बे-सबब नहीं "ग़ालिब"
कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है

बे-खुदी = rapture, बे-सबब = without any reason, पर्दादारी = to hide, esp. fault

22. (a) रौने से और इश्क़ में बे-बाक़ हो गये
धोये गये हम 'एसे कि बस पाक़ हो गये

बे-बाक़ = outspoken/bold, पाक़ = pure/clean/holy

(b) सर्फ़-ए-बहा-ए-मय हुए आलात-ए-मयक़शी
थे ये ही दो हिसाब, सो यों पाक़ हो गये

सर्फ़ = expenditure, बहा = value/price, मय = bar, आलात = instruments/apparatus,
मयक़शी = boozing

(c) रुस्वा-ए-दहर गो हुए आवारगी से तुम
बारे तबीयतों के तो चालाक़ हो गये

दहर = world, बारे = at last

(k) खुश होते हैं पर वस्ल में यों मर नहीं जाते

आयी शब-ए-हिजराँ कि तमन्ना मेरे आगे

हिज्र = separation

(l) है मौज-जन इक कुल्लुम-ए-खूँ, काश, यही हो
आता है अभी देखिये क्या-क्या मेरे आगे

मौज-जन = exciting, कुल्लुम = sea, खूँ = blood

(m) गो हाथ को जुम्बिश नहीं आँहों में तो दम है
रेहने दो अभी सागर-ओ-मीना मेरे आगे

जुम्बिश = movement/vibration, सागर-ओ-मीना = goblet

(n) हम-पेशा-ओ-हम-मशर्ब-ओ-हम-राज है मेरा
“गालिब” को बुरा क्यों कहो अच्छा मेरे आगे !

हम-पेशा = of the same profession, हम-मशर्ब = of the same habits/a fellow boozier,

हम-राज = confidant

21. (a) फिर कुछ इस दिल को बेकरारी है
सीना जोया-ए-जख्म-ए-कारी है

जोया = searcher, जख्म-ए-कारी = deep wound

(b) फिर जिगर खोदने लगा नाखुन
आमद-ए-फ़स्त-ए-लाला-कारी है

आमद = arrival, फ़स्त = season/harvest

(c) क़िब्ला-ए-मक़सद-ए-निगाह-ए-नियाज
फ़िर वही पर्दा-ए-अमारी है

नियाज = desire, 'अमारी = rider's seat with a canopy on an elephant or camel

(d) चश्म-ए-दल्लाल-ए-जिन्स-ए-रुस्वाई
दिल खरीदार-ए-जौक-ए-ख्वारी है

चश्म = eye, जिन्स = things/items, जौक = taste

(e) वोही सद-रंग नाला फ़र्सायी
वोही सद-गूना अशक़-बारी है

सद = hundred, नाला फ़र्सायी = lamenter, सद-गूना = hundred times, अशक़-बारी = lamentation

(f) दिल हवा-ए-खिराम-ए-नाज से फिर
महशरिस्तान-ए-बेकरारी है

खिराम = speed, महशर = the last day/“ क़यामत का दिन ”,

महशरिस्तान = place of the last day

- (c) जेहर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर, वर्ना
क्या कसम है तेरे मिलने की, के खा भी न सकूँ

सितमगर = oppressor

20. (a) बाजीचा-ए-अत्फ़ाल है दुनिया मेरे आगे
होता है शब-ओ-रोज तमाशा मेरे आगे
बाजीचा = play/sport, अत्फ़ाल = children
- (b) इक खेल है औरंग-ए-सुलेमाँ मेरे नजदीक
इक बात है 'एजाज-ए-मसीहा मेरे आगे
औरंग = throne, 'एजाज = miracle
- (c) जुज नाम नहीं सूरत-ए-आलम मुझे मंजूर
जुज वहम नहीं हस्ती-ए-अशिया मेरे आगे
जुज = other than, आलम = world, हस्ती = existence, अशिया = things/items
- (d) होता है निहाँ गर्द में सेहरा मेरे होते
घिसता है जबीं खाक पे दरिया मेरे आगे
निहाँ = hidden, गर्द = dust, सेहरा = desert, जबीं = forehead
- (e) मत पूछ के क्या हाल है मेरा तेरे पीछे ?
तू देख के क्या रंग है तेरा मेरे आगे
- (f) सच कहते हो, खुदबीन-ओ-खुद-आरा न क्यों हूँ ?
बैठा है बुत-ए-आइना-सीमा मेरे आगे
खुदबीन = proud/arrogant, खुद-आरा = self adorer, बुत = beloved,
आइना-सीमा = like the face of a mirror
- (g) फिर देखिये अन्दाज-ए-गुल-अफ़शानि-ए-गुफ़्तार
रख दे कोई पैमाना-ओ-सहबा मेरे आगे
गुल-अफ़शानी = to scatter flowers, गुफ़्तार = speech/discourse, सहबा = wine, esp. red wine
- (h) नफ़रत का गुमाँ गुजरे है, मैं रश्क से गुजरा
क्यों कर कहूँ, लो नाम न उसका मेरे आगे
गुमाँ = doubt, रश्क = envy
- (i) इमाँ मुझे रोके है जो खींचे है मुझे कुफ़्र
क'अबा मेरे पीछे है कलीसा मेरे आगे
कुफ़्र = impiety, कलीसा = church/cathedral
- (j) आशिक हूँ, पे माशूक-फ़रेबी है मेरा काम
मजनूँ को बुरा कहती है लैला मेरे आगे
फ़रेबी = a fraud/cheat

- (e) क्राता-ए-अमार है अक्सर नुजूम
वो बला-ए-आस्मानी और है

क्राता-ए-अमार = killers, नुजूम = stars, बला-ए-आस्मानी = natural calamity

- (f) हो चुकीं “गालिब” बलायें सब तमाम
एक मर्ग-ए-नागहानी और है

बलायें = calamities, मर्ग = death, नागहानी = sudden/accidental

-
18. (a) आह को चाहिये इक उम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी जुल्फ़ के सर होने तक ?

- (b) दाम हर मौज में है हल्का-ए-सद-काम-ए-नहंग
देखें क्या गुजरे है कत्रे पे गुहर होने तक

दाम = net/trap, मौज = wave, हल्का = ring/circle, सद = hundred, नहंग = crocodile,
सद-काम-ए-नहंग = crocodile with a hundred jaws, गुहर = pearl

- (c) आशिकी सब्र तलब और तमन्ना बेताब
दिल का क्या रंग करूँ खून-ए-जिगर होने तक ?

सब्र = patience, तलब = search

- (d) हम ने माना के तगाफ़ुल न करोगे, लेकिन
खाक हो जायेंगे हम तुमको खबर होने तक

तगाफ़ुल = neglect/ignore

- (e) पर्तव-ए-खुर से है शबनम को फ़न'आ की तालीम
मैं भी हूँ इक इनायत की नज़र होने तक

पर्तव-ए-खुर = sun's reflection/light/image, शबनम = dew, फ़न'आ = mortality, इनायत = favour

- (f) यक-नज़र बेश नहीं फ़ुर्सत-ए-हस्ती गाफ़िल
गर्मी-ए-बज्म है इक रक्स-ए-शरर होने तक

बेश = too much/lots, फ़ुर्सत-ए-हस्ती = duration of life, गाफ़िल = careless, रक्स = dance,
शरर = flash/fire

- (g) ग़म-ए-हस्ती का “असद” किससे हो जुज़ मर्ग इलाज़
शम्म'आ हर रंग में जलती है सहर होने तक

हस्ती = life/existence, जुज़ = other than, मर्ग = death, सहर = morning

-
19. (a) मेहेरबाँ होके बुला लो मुझे चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक़्त नहीं हूँ के फ़िर आ भी न सकूँ

- (b) जौफ़ में ताना-ए-अग़यार का शिकवा क्या है ?
बात कुछ सर तो नहीं है के उठा भी न सकूँ

जौफ़ = weakness, ताना = taunt, अग़यार = enemy, शिकवा = complaint

- (h) मोहब्बत में नहीं है फ़र्क जीने और मरने का
उसी को देख कर जीते हैं जिस काफ़िर पे दम निकले
- (i) ज़रा कर जोर सीने पर कि तीर-ए-पुरसितम निकले
जो वो निकले तो दिल निकले, जो दिल निकले तो दम निकले
- (j) खुदा के वास्ते पर्दा न काबे से उठा ज़ालिम
कहीं 'एसा न हो याँ भी वोही काफ़िर सनम निकले
- (k) कहाँ मैखाने का दरवाज़ा "ग़ालिब" और कहाँ वाइज़
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था के हम निकले
वाइज़ = preacher/advisor
-

16. (a) ये जो हम हिज़्र में दीवार-ओ-दर को देखते हैं
कभी सबा को कभी नामाबर को देखते हैं
हिज़्र = separation, दर = door, सबा = wind, नामाबर = messenger
- (b) वो आये घर में हमारे खुदा की कुदरत है
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं
- (c) नज़र लगे न कहीं उसके दस्त-ओ-बाजू को
ये लोग क्यों मेरे ज़ख्म-ए-जिगर को देखते हैं ?
दस्त-ओ-बाजू = hands & shoulders
- (d) तेरे जवाहिर-ए-तर्फ़-ए-कुलह को क्या देखें ?
हम औज़-ए-ताल'आ-ए-लाल-ओ-गुहर को देखते हैं
जवाहिर = jewels, तर्फ़ = golden belt, कुलह = crown, औज़ = height/position, ताल'आ = luck,
लाल-ओ-गुहर = diamonds & pearls
-

17. (a) कोई दिन गर ज़िन्दगानी और है
अपने जी में हमने ठानी और है
- (b) आतिश-ए-दोज़ख़ में ये गर्मी कहाँ
सोज़-ए-ग़म हाय निहानी और है
दोज़ख़ = hell, सोज़ = passion/heat, निहानी = internal/hidden
- (c) बारहा देखी हैं उनकी रन्जिशें
पर कुछ अब के सर-गिरानी और है
सर-गिरानी = pride
- (d) देके ख़त मुँह देखता है नामाबर
कुछ तो पैग़ाम-ए-ज़बानी और है
नामाबर = messenger

- (h) बेदाद-ए-इश्क से नहीं डरता मगर “असद”
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा
बेदाद = injustice

-
14. (a) न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता ?
- (b) हुआ जब ग़म से यूँ बेहिस तो ग़म क्या सर के कटने का
न होता गर जुदा तन से तो जानूँ पर धरा होता
बेहिस = shocked/stunned, जानूँ = kneel
- (c) हुई मुद्दत के “ग़ालिब” मर गया पर याद आता है
वो हर एक बात पे केहना, के यूँ होता तो क्या होता ?
मुद्दत = duration/period

-
15. (a) हज़ारों ख्वाहिशें 'एसी के हर ख्वाहिश पे दम निकले
बोहोत निकले मेरे अरमाँ लेकिन फिर भी कम निकले
- (b) डरे क्यूँ मेरा क़ातिल क्या रहेगा उसकी गर्दन पर
वो खूँ, जो चश्म-ए-तर से 'उम्र भर यूँ दम-बा-दम निकले
खूँ = blood, चश्म = eye, तर = wet, दम-बा-दम = continuously
- (c) निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये हैं लेकिन
बोहोत बे-आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले
खुल्द = heaven, बे-आबरू = disgrace, कूचा = street
- (d) भरम खुल जाये ज़ालिम तेरे क़ामत की दराज़ी का
अगर इस तुर्रा-ए-पुर-पेच-ओ-ख़म का पेच-ओ-ख़म निकले
दराज़ी = length/delay, क़ामत = stature, तुर्रा = an ornamental tassel worn in the turban,
पेच-ओ-ख़म = curls in the hair/complexity
- (e) मगर लिखवाये कोई उसको ख़त, तो हमसे लिखवाये
हुई सुबह और घर से कान पर रखकर क़लम निकले
- (f) हुई इस दौर में मनसूब मुझसे बादा-आशामी
फ़िर आया वो ज़माना, जो जहाँ से ज़ाम-ए-जम निकले
मनसूब = association, बादा-आशामी = association with drinking
- (g) हुई जिनसे तवक्क़ो ख़स्तगी की दाद पाने की
वो हमसे भी ज़ियादा ख़स्ता-ए-तेग़-ए-सितम निकले
तवक्क़ो = expectation, ख़स्तगी = weakness, दाद = justice, ख़स्ता = broken/sick/injured,
तेग़ = sword, सितम = cruelty

- (b) जख्म ने दाद न दी, तंगी-ए-दिल कि यारब !
तीर भी सीना-ए-बिस्मिल से पर-अफ़शाँ निकला
दाद = justice, सीना-ए-बिस्मिल = wounded heart, पर = wings, अफ़शाँ = rattle
- (c) बू-ए-गुल, नाला-ए-दिल, दूद-ए-चराग़-ए-महफ़िल
जो तेरी बज्म से निकला, सो परिशाँ निकला
बू = fragrance, गुल = flower, नाला = cry, दूद = smoke, esp. from a lamp that's been extinguished
- (d) थी नौ-आमोज़-फ़न'आ हिम्मत-ए-दुश्वार-पसन्द
सख्त मुश्किल है कि यह काम भी आसाँ निकला
नौ-आमोज़ = beginner, दुश्वार = difficult
- (e) दिल में फ़िर गिरियाँ ने इक शोर उठाया "ग़ालिब"
आह जो क़त्रा न निकला था, सो तूफ़ाँ निकला
गिरियाँ = weeping, क़त्रा = drop

13. (a) 'अर्ज़-ए-नियाज़-ए-इश्क़ के काबिल नहीं रहा
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा
नियाज़ = desire/an offering
- (b) जाता हूँ दाग़-ए-हसरत-ए-हस्ती लिये हुए
हूँ शम्म'आ-कुशता दख़ुर-ए-महफ़िल नहीं रहा
हस्ती = life/existence, शम्म'आ-कुशता = extinguished lamp, दख़ुर = worthy
- (c) मरने की 'ए दिल और ही तदबीर कर कि मैं
शायान-ए-दस्त-ओ-बाजू-ए-क्रातिल नहीं रहा
तदबीर = solution/remedy, शायान = worthy, दस्त = hand, बाजू = shoulder
- (d) बररू-ए-शश जिहत दर-ए-आइना-बाज़ है
याँ इम्तिआज़-ए-नाकिस-ओ-क्रामिल नहीं रहा
बररू = in front, शश = six, जिहत = direction, इम्तिआज़ = distinction, नाकिस = cunning,
क्रामिल = intelligent
- (e) वा कर दिये हैं शौक़ ने बन्द-ए-नक्राब-ए-हुस्न
ग़ैर-अज़ निगाह अब कोई हायल नहीं रहा
वा = open, ग़ैर-अज़ = other than, हायल = obstacle
- (f) गो मैं रहा, रही न सितम हाये रोज़गार
लेकिन तेरे ख़याल से गाफ़िल नहीं रहा
सितम = oppression, गाफ़िल = unaware/careless
- (g) दिल से हवा-ए-किशत-ए-वफ़ा मिट गयी कि वाँ
हासिल सिवाय हसरत-ए-हासिल नहीं रहा

- (d) पिला दे ओअक से साक्री जो हमसे नफ़रत है
प्याला गर नहीं देता न दे, शराब तो दे
ओअक = palm of the hand contracted so as to hold water
- (e) “असद” खुशी से मेरे हाथ पाँव फूल गये
कहा जो उसने ज़रा मेरे पाँव दाब तो दे

11. (a) घर जब बना लिया है तेरे दर पर कहे बग़ैर
जानेगा अब भी तू न मेरा घर कहे बग़ैर
- (b) कहते हैं, जब रही न मुझे ताक़त-ए-सुखन
जानूँ किसी के दिल कि मैं क्योंकर कहे बग़ैर
ताक़त-ए-सुखन = strength to speak
- (c) काम उससे आ पड़ा है कि जिसका जहान में
लेवे न कोई नाम 'सितमगर' कहे बग़ैर
सितमगर = oppressor
- (d) जी में ही कुछ नहीं है हमारे, वर्ना हम
सर जाये या रहे, न रहें पर कहे बग़ैर
- (e) छोड़ूँगा मैं न उस बुत-ए-काफ़िर का पूजना
छोड़े न खलक़ गो मुझे काफ़िर कहे बग़ैर
बुत = idol/lover, खलक़ = world
- (f) मक्सद है नाज़-ओ-गम्ज़ा, वले गुफ़्तगू में काम
चलता नहीं है, दशना-ओ-खंजर कहे बग़ैर
गम्ज़ा = amorous glance, दशना = dagger
- (g) हर चन्द हो मुशाहित-ए-हक़ कि गुफ़्तगू
बनती नहीं है बादा-ओ-सागर कहे बग़ैर
मुशाहित = God, बादा = wine
- (h) बेहरा हूँ मैं तो चाहिये दूना हो इल्तफ़ात
सुनता नहीं हूँ बात मुकर्रर कहे बग़ैर
इल्तफ़ात = mercy, मुकर्रर = again
- (i) “ग़ालिब” न कर हुज़ूर में तू बार-बार 'अर्ज़
ज़ाहिर है तेरा हाल सब उन पर कहे बग़ैर

12. (a) शौक़ हर रंग रक़ीब-ए-सर-ओ-सामाँ निकला
क़ैस तस्वीर के पर्दे में भी उरियाँ निकला
रक़ीब = opponent, सर-ओ-सामाँ = with belongings, क़ैस ۛ 'मजनूँ', उरियाँ = nude

(c) मैं भी मुँह में जबान रखता हूँ
काश ! पूछो कि “मुद्दा क्या है” ?

(d) जब कि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद
फ़िर ये हन्गामा, 'ए खुदा ! क्या है

(e) ये परी चेहरा लोग कैसे हैं ?
गम्जा-ओ-इश्वा-ओ-'अदा क्या है ?

परी चेहरा = angel faced, गम्जा = amorous glance, इश्वा = coquetry

(f) शिकन-ए-जुल्फ़-ए-अम्बरी क्यों है ?
निगाह-ए-चश्म-ए-सूर्मा सा क्या है ?

शिकन = wrinkle/fold, अम्बरी = fragrance, चश्म = eye

(g) सब्जा-ओ-गुल कहाँ से आये हैं ?
अब्र क्या चीज़ है, हवा क्या है ?

अब्र = clouds

(h) हमको उनसे वफ़ा कि है उम्मीद
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है

(i) “हाँ भला कर तेरा भला होगा”
और दर्वेश की सदा क्या है ?

दर्वेश = beggar, सदा = voice

(j) जान तुम पर निसार करता हूँ
मैं नहीं जानता दुआ क्या है

(k) मैंने माना कि कुछ नहीं “शालिब”
मुफ़्त हाथ आये तो बुरा क्या है ?

10. (a) वो आके ख्वाब में तस्कीन-ए-इज्जिराब तो दे
वले मुझे तपिश-ए-दिल, मज्जाल-ए-ख्वाब तो दे

तस्कीन = satisfaction, इज्जिराब = anxiety, तपिश = burn/passion, मज्जाल = strength

(b) करे है क़त्ल लगावत में तेरा रो देना
तेरी तरह कोई तेग़-ए-निगाह को आब तो दे
लगावत = affection, तेग़ = sword, आब = cool

(c) दिखाके जुम्बिश-ए-लब ही तमाम कर हमको
न दे जो बोसा, तो मुँह से कहीं जवाब तो दे
जुम्बिश = motion/vibration, बोसा = kiss

- (m) “गालिब” छुटी शराब, पर अब भी कभी-कभी
पीता हूँ रोज़-ए-अब्र -ओ- शब-ए-माहूताब में
अब्र = clouds, रोज़-ए-अब्र = cloudy day, माहूताब = moon
-

8. (a) दायम पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूँ मैं
खाक ऐसी जिन्दगी पे के पत्थर नहीं हूँ मैं
दायम = always
- (b) क्यूँ गर्दिश-ए-मुदाम से घबरा न जाये दिल ?
इन्सान हूँ, प्याला-ओ-सागर नहीं हूँ मैं
गर्दिश = bad time/luck, मुदाम = always
- (c) यारब ! जमाना मुझको मिटाता है किस लिये ?
लोह-ए-जहाँ पे हर्फ़-ए-मुकर्रर नहीं हूँ मैं
हर्फ़ = alphabet, मुकर्रर = again
- (d) हद चाहिये सजा में उकूबत के वास्ते
आखिर गुनाहगार हूँ, काफ़िर नहीं हूँ मैं
उकूबत = pain
- (e) किस वास्ते अजीज नहीं जानते मुझे ?
लाल-ओ-जुमूर्द-ओ-जर-ओ-गौहर नहीं हूँ मैं
लाल = a kind of gem, जुमूर्द = green colored gem, जर = gold, गौहर = gem
- (f) रखते हो तुम क़दम मेरी आँखों से क्या दरेग
रुत्बे में मेहर-ओ-माह से कमतर नहीं हूँ मैं
दरेग = regret/grief, मेहर = sun, माह = moon
- (g) करते हो मुझको मन'आ-ए-क़दम-बोस किस लिये ?
क्या आस्मान के भी बराबर नहीं हूँ मैं ?
बोसा = kiss
- (h) “गालिब” वज़िफ़ा-ख़वार हो, दो शाह को दुआ
वो दिन गये कि कहते थे , “नौकर नहीं हूँ मैं”
वज़िफ़ा-ख़वार = pensioner
-

9. (a) दिल-ए-नादाँ तुझे हुआ क्या है ?
आखिर इस दर्द की दवा क्या है
- (b) हम हैं मुश्ताक़ और वो बेज़ार
या इलाही ! ये माजरा क्या है ?
मुश्ताक़ = interested, बेज़ार = displeased/sick of

- (c) ता फिर न इन्तेजार में नींद आये 'उम्र भर
आने का 'अहद कर गये आये जो ख़्वाब में
ता = so that, 'अहद = promise
- (d) क़ासिद के आते-आते ख़त इक और लिख रखूँ
मैं जानता हूँ जो वो लिखेंगे जवाब में
क़ासिद = messenger
- (e) मुझ तक कब उनकी बज़्म में आता था दौर-ए-जाम
साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में
बज़्म = meeting/ "मेहफ़िल" , साक़ी = bar tender
- (f) जो मुन्किर-ए-वफ़ा हो फ़रेब उस पे क्या चले ?
क्यूँ बद्गुमाँ हूँ दोस्त से दुश्मन के बाब में ?
मुन्किर-ए-वफ़ा = one who denies loyalty, फ़रेब = illusion/fraud, बद्गुमाँ = suspicious,
बाब = company
- (g) मैं मुज्तरिब हूँ वस्ल में ख़ौफ़-ए-रक़ीब से
डाला है तुमको वेहम ने किस पेच-ओ-ताब में
मुज्तरिब = anxious/disturbed, वस्ल = meeting with the lover, ख़ौफ़ = fear, रक़ीब = opponent,
पेच-ओ-ताब = predicament
- (h) मय और हज़'ज़-ए-वस्ल, खुदा-साज़ बात है
जाँ नज़्र देनी भूल गया इज्तिराब में
मय = bar, हज़'ज़-ए-वस्ल = joy of meeting, खुदा-साज़ = god's gift, इज्तिराब = anxiety
- (i) है तेवरी चड़ी हुई अन्दर नक्राब के
है इक शिकन पड़ी हुई तर्फ़-ए-नक्राब में
शिकन = wrinkle, तर्फ़ = eyelid
- (j) लाखों लगाव, इक चुराना निगाह का
लाखों बनाव, इक बिगाड़ना इताब में
इताब = anger
- (k) वो नाला-दिल में ख़स के बराबर जगह न पाये
जिस नाले से शिगाफ़ पड़े आफ़ताब में
नाला-दिल = crying heart, ख़स = hay/grass, शिगाफ़ = crack, आफ़ताब = sun/face
- (l) वो सेहर मुद्दा तल्बी में न काम आये
जिस सेहर से सफ़िना रवाँ हो सराब में
सेहर = magic, मुद्दा तल्बी = fulfillment of a desire, सफ़िना = boat, रवाँ = move, सराब = mirage

6. (a) दिल से तेरी निगाह जिगर तक उतर गयी
दोनों को इक अदा में रजामन्द कर गयी
- (b) शक़ हो गया है सीना, खुशी लज्जत-ए-फ़िराक़
तक्लीफ़-ए-पर्दादारी-ए-जख़्म-ए-जिगर गयी
शक़ = crack/split, फ़िराक़ = separation, पर्दादारी = to hide, esp. fault
- (c) वो बादा-ए-शबाना की सर मस्तियाँ कहाँ ?
उठिये बस अब कि लज्जत-ए-ख़्वाब-ए-सहर गयी
बादा = wine, शबाना = night, सहर = morning
- (d) उड़ती फ़िरे है खाक़ मेरी कू-ए-यार से
बारे अब 'ए हवा, हवस-ए-बाल-ओ-पर गयी
बारे = at last, कू-ए-यार = lover's street
- (e) देखूँ तो दिल-फ़रेबी-ए-अन्दाज़-ए-नक़्श-ए-पा
मौज-ए-ख़िराम-ए-यार भी क्या गुल कतर गयी
दिल-फ़रेब = heart alluring, नक़्श = copy/print, पा = leg, मौज = wave/enjoyment,
ख़िराम = speed
- (f) हर बुलहवस ने हुस्न-परस्ती शिआर की
अब आबरू-ए-शेवा-ए-'एहल-ए-नज़र गयी
बुलहवस = greedy, हुस्न-परस्ती = to appreciate beauty, शिआर = habit, आबरू = respect/honour,
शेवा = manner/habit
- (g) नज़ारे ने भी काम किया वाँ नक्राब का
मस्ती से हर निगाह तेरे रुख़ पर बिखर गयी
- (h) फ़र्दा-ओ-दी का तफ़र्का यक बार मिट गया
कल तुम गये के हम पे क़यामत गुज़र गयी
फ़र्दा = yesterday, दी = tomorrow, तफ़र्का = difference
- (i) मारा ज़माने ने "असदुल्लाह ख़ाँ" तुम्हें
वो वल्वले कहाँ, वो जवानी किधर गयी ?
वल्वले = enthusiasm

-
7. (a) मिलती है खू-ए-यार से नार इल्लिहाब में
काफ़िर हूँ गर न मिलती हो राहत 'अज़ाब में
खू-ए-यार = lover's nature/behavior/habit, नार = fire, इल्लिहाब = flame, 'अज़ाब = sorrow
- (b) कब से हूँ, क्या बताऊँ जहान-ए-ख़राब में ?
शब हाये हिज़्र को भी रखूँ गर हिसाब में
जहान-ए-ख़राब = world of problems, शब = night, हिज़्र = separation

- (d) आगही दाम-ए-शुनीदन जिस क़दर चाहे बिछाये
मुद्'आ 'अनक्रा है अपने आलम-ए-तक्ररीर का
आगही = knowledge/intuition, दाम = net/trap, शुनीद = conversation, 'अनक्रा = rare,
आलम = world/universe, तक्ररीर = speech/discourse
- (e) बस के हूँ "ग़ालिब" असीरी में भी आतिश ज़ेर-ए-पा
मू-ए-आतिश-दीदा है हल्का मेरी जन्जीर का
असीरी = imprisonment/captivity, ज़ेर-ए-पा = under the feet, मू = hair,
आतिश-दीदा = roasted on fire, हल्का = ring/circle

5. (a) कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाये है मुझसे
जफ़ायें करके अपनी याद शर्मा जाये है मुझसे
जफ़ायें = oppression/tyranny of a beloved
- (b) खुदाया ! जज़्बा-ए-दिल की मगर तासीर उल्टी है
कि जितना खींचता हूँ और खिंचता जाये है मुझसे
जज़्बा-ए-दिल = emotions, तासीर = impression
- (c) वो बद-खू और मेरी दास्तन-ए-इश्क़ तुलानी
इबारत मुस्तसर, क़ासिद भी घबरा जाये है मुझसे
बद-खू = bad habits, तुलानी = long, इबारत = diction/ admonishing,
मुस्तसर = concise, क़ासिद = messenger
- (d) उधर वो बद-गुमानी है, इधर ये नातवानी है
न पूछा जाये है उस'से, न बोला जाये है मुझसे
बदगुमानी = suspicion, नातवानी = weakness
- (e) सम्भलने दे मुझे 'ए ना-उम्मीदी क्या क़यामत है
कि दामन-ए-ख़याल-ए-यार छूटा जाये है मुझसे
- (f) तकल्लुफ़ बर्तरफ़ नज़ारगी में भी सही, लेकिन
वो देखा जाये, कब ये जुल्म देखा जाये है मुझसे
तकल्लुफ़ = hesitation/formality, बर्तरफ़ = suspend
- (g) हुए हैं पाँव ही पहले नबर्द-ए-इश्क़ में जख़्मी
न भागा जाये है मुझसे, न ठेहरा जाये है मुझसे
नबर्द-ए-इश्क़ = struggle in love
- (h) क़यामत है के होवे मुद्ई का हम-सफ़र "ग़ालिब"
वो काफ़िर, जो खुदा को भी न सौपा जाये है मुझसे

3. (a) ग़ैर लें महफ़िल में बोसे जाम के
हम रहें यूँ तिश्ना-लब पैग़ाम के
बोसा = kiss, तिश्ना = thirsty
- (b) खस्तगी का तुमसे क्या शिक्वा कि ये
हथकंडे हैं चर्ख-ए-नीली-फ़ाम के
खस्तगी = injury/sickness, शिक्वा = complaint, हथकंडे = tactics, चर्ख = sky,
नीली-फ़ाम = blue colour/ complexion
- (c) खत लिखेंगे गर्चे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक्र हैं तुम्हारे नाम के
- (d) रात पी ज़मज़म पे मय और सुभ-दम
धोये धब'बे जाम-ए-'एहराम के
ज़मज़म = a well in Kabaa whose water is considered holy, मय = wine, सुभ-दम = at dawn,
'एहराम = dress for 'haj'
- (e) दिल को आँखों ने फ़साया क्या मगर
ये भी हल्के हैं तुम्हारे दाम के
हल्का = ring/circle, दाम = net/trap
- (f) शाह के हैं गुस्त-ए-सेहत को खबर
देखिये कब दिन फ़िरें हम्माम के
गुस्त = bath, सेहत = health, हम्माम = a hot bath where a masseur gives massage and bath
- (g) इश्क़ ने "ग़ालिब" निकम्मा कर दिया
वर्ना हम भी आदमी थे काम के

4. (a) नक़श फ़रियादी है किसकी शोखी-ए-तेहरीर का
कागज़ी है पैराहन हर पैकर-ए-तस्वीर का
नक़श = copy/print, फ़रियाद = complaint, तेहरीर = hand writing, कागज़ी = delicate,
पैराहन = dress, पैकर = appearance
- (b) कावे-कावे सख्त-जानी हाय तन्हाई न पूछ
सुबह करना शाम का लाना है जू-ए-शीर का
कावे-कावे = hard work, सख्त-जानी = tough life, जू = canal/stream, शीर = milk,
जू-ए-शीर = to create a canal of milk, here means to perform an impossible task
- (c) जज़्बा-ए-बे-इस्तियार-ए-शौक़ देखा चाहिये
सीना-ए-शमशीर से बाहर है दम शमशीर का
इस्तियार = authority/power, शमशीर = sword

- (j) हुआ है शाह का मुसाहिब, फ़िरे है इतराता
वर्ना शेहर में “ग़ालिब” की आबरू क्या है ?

मुसाहिब = comrade/associate

2. (a) हुस्न-ए-मह, गर्चे बा-हंगाम-ए-कमाल अच्छा है
उससे मेरा मह-ए-खुशीद-ए-जमाल अच्छा है
मह = moon, खुशीद = sun, jmAl = beauty
- (b) बोसा देते नहीं और दिल पे है हर लहजा निगाह
जी में कहते हैं, मुफ्त आये तो माल अच्छा है
बोसा = kiss
- (c) और बाज़ार से ले आये अगर टूट गया
सागर-ए-जम से मेरा जाम-ए-सिफ़ाल अच्छा है
सागर-ए-जम = Badshah Jamshed's cup, जाम-ए-सिफ़ाल = clay cup
- (d) बे-तलब दें तो मज़ा उसमें सिवा मिलता है
वो गदा जिसको न हो खू-ए-सवाल अच्छा है
बे-तलब = without any enquiry, गदा = beggar, खू = habit
- (e) उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक
वो समझते हैं के बीमार का हाल अच्छा है
- (f) देखिये पाते हैं उश्शाक़ बुतों से क्या फ़ैज ?
इक बिराहमण ने कहा है, के ये साल अच्छा है
उश्शाक़ = lovers, फ़ैज = profit
- (g) हम-सुखन तेशे ने फ़र्हाद को शीरीं से किया
जिस तरह का भी किसी में हो कमाल अच्छा है
हम-सुखन = together, तेशा = axe
- (h) क़त्रा दरिया में जो मिल जाये तो दरिया हो जाये
काम अच्छा है वोह, जिसका म'आल अच्छा है
म'आल = result
- (i) ख़िज़्र सुलताँ को रखे ख़ालिक़-ए-अक्बर सर-सब्ज़
शाह के बाग़ में ये ताज़ा निहाल अच्छा है
ख़िज़्र सुलताँ = one of Badshah Zafar's son, ख़ालिक़ = The Creator/God,
अक्बर = greatest, सर-सब्ज़ = fertile, निहाल = tree
- (j) हमको मालूम है जन्नत की हकीक़त लेकिन
दिल के खुश रखने को, “ग़ालिब” ये ख़याल अच्छा है
-

1. (a) हर एक बात पे कहते हो तुम के “तू क्या है” ?
तुम्हीं कहो के ये अन्दाज़-ए-गुफ्तगू क्या है ?
गुफ्तगू = conversation
- (b) न शोले में ये करिश्मा न बर्क में ये अदा
कोई बताओ कि वो शोख-ए-तुन्द-खू क्या है ?
बर्क = lightning, तुन्द = sharp/angry, खू = behavior
- (c) ये रश्क है कि वो होता है हम-सुखन तुमसे
वर्ना खौफ़-ए-बद-आमोज़ि-ए-अदू क्या है ?
रश्क = jealousy, हम-सुखन = to speak together/to agree, खौफ़ = fear, बद = bad/wicked,
आमोज़ी = education/teaching, अदू = enemy
- (d) चिपक रहा है बदन पर लहू से पैराहन
हमारी जेब को अब हाजत-ए-रफू क्या है ?
पैराहन = shirt/robe/cloth, हाजत = need/necessity, रफू = mending/darning
- (e) जला है जिस्म जहाँ दिल भी जल गया होगा
कुरेदते हो जो अब राख, जुस्तजू क्या है ?
जुस्तजू = desire
- (f) रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं कायल
जब आँख ही से न टप्का तो फिर लहू क्या है ?
- (g) वो चीज़ जिसके लिये हमको हो बहिश्त अज़ीज़
सिवाय बादा-ए-गुल-फ़ाम-ए-मुश्कबू क्या है ?
बहिश्त (or बिहिश्त, both are correct) = heaven, बादा = wine,
गुल-फ़ाम = delicate and fragrant like flowers, मुश्कबू = like the smell of musk
- (h) पियूँ शराब अगर खुम भी देख लूँ दो चार
ये शीशा-ओ-क़दह-ओ-कूज़ा-ओ-सुबू क्या है ?
खुम = wine barrel, क़दह = goblet, कूज़ा-ओ-सुबू = wine pitcher
- (i) रही न ताक़त-ए-गुफ़्तार, और अगर हो भी
तो किस उम्मीद पे कहिये के आरजू क्या है ?
गुफ़्तार = speech/discourse

authorities, mainly with the purpose of proving that he had not supported the insurrections. Although his life and immediate possessions were spared, little value was attached to his writings; he was flatly told that he was still suspected of having had loyalties toward the Moghul king. During the ensuing years, his main source of income continued to be the stipend he got from the Nawab of Rampur. "Ud-i-Hindi", the first collection of his letters, was published in October 1868. Ghalib died a few months later, on February 15th, 1869.

Ghalib had many attitudes toward the British, most of them complicated and quite contradictory. His diary of 1857, the “Dast-Ambooh” is a pro-British document, criticizing the British here and there for excessively harsh rule but expressing, on the whole, horror at the tactics of the resistance forces. His letters, however, are some of the most graphic and vivid accounts of British violence that we possess. We also know that “Dast-Ambooh” was always meant to be a document that Ghalib would make public, not only to the Indian Press but specifically to the British authorities. And he even wanted to send a copy of it to Queen Victoria. His letters, are to the contrary, written to people he trusted very much, people who were his friends and would not divulge their contents to the British authorities. As Imtiyaz Ali Arshi has shown (at least to my satisfaction), whenever Ghalib feared the intimate, anti-British contents of his letters might not remain private, he requested their destruction, as he did in the case of the Nawab of Rampur. I think it is reasonable to conjecture that the diary, the “Dast-Ambooh”, is a document put together by a frightened man who was looking for avenues of safety and forging versions of his own experience in order to please his oppressors, whereas the letters, those private documents of one-to-one intimacy, are more real in the expression of what Ghalib was in fact feeling at the time. And what he was feeling, according to the letters, was horror at the wholesale violence practised by the British.

Yet, matters are not so simple as that either. We cannot explain things away in terms of altogether honest letters and an altogether dishonest diary. Human and intellectual responses are more complex. The fact that Ghalib, like many other Indians at the time, admired British, and therefore Western, rationalism as expressed in constitutional law, city planning and more. His trip to Calcutta (1828-29) had done much to convince him of the immediate values of Western pragmatism. This immensely curious and human man from the narrow streets of a decaying Delhi, had suddenly been flung into the broad, well-planned avenues of 1828 Calcutta – from the aging Moghul capital to the new, prosperous and clean capital of the rising British power, and, given the precociousness of his mind, he had not only walked on clean streets, but had also asked the fundamental questions about the sort of mind that planned that sort of city. In short, he was impressed by much that was British.

In Calcutta he saw cleanliness, good city planning, prosperity. He was fascinated by the quality of the Western mind which was rational and could conceive of constitutional government, republicanism, skepticism. The Western mind was attractive particularly to one who, although fully imbued with his feudal and Muslim background, was also attracted by wider intelligence like the one that Western scientific thought offered: good rationalism promised to be good government. The sense that this very rationalism, the very mind that had planned the first modern city in India, was also in the service of a brutal and brutalizing mercantile ethic which was to produce not a humane society but an empire, began to come to Ghalib only when the onslaught of 1857 caught up with the Delhi of his own friends. Whatever admiration he had ever felt for the British was seriously brought into question by the events of that year, more particularly by the mercilessness of the British in their dealings with those who participated in or sympathized with the Revolt. This is no place to go into the details of the massacre; I will refer here only to the recent researches of Dr. Ashraf (Ashraf, K.M., “Ghalib & The Revolt of 1857”, in *Rebellion 1857*, ed., P.C. Joshi, 1957), in India, which prove that at least 27,000 persons were hanged during the summer of that one year, and Ghalib witnessed it all. It was obviously impossible for him to reconcile this conduct with whatever humanity and progressive ideals he had ever expected the British to have possessed. His letters tell of his terrible dissatisfaction.

Ghalib’s ambivalence toward the British possibly represents a characteristic dilemma of the Indian — indeed, the Asian — people. Whereas they are fascinated by the liberalism of the Western mind and virtually seduced by the possibility that Western science and technology might be the answer to poverty and other problems of their material existence, they feel a very deep repugnance for forms and intensities of violence which are also peculiarly Western. Ghalib was probably not as fully aware of his dilemma as the intellectuals of today might be; to assign such awareness to a mid-nineteenth-century mind would be to violate it by denying the very terms — which means limitations —, as well — of its existence. His bewilderment at the extent of the destruction caused by the very people of whose humanity he had been convinced can, however, be understood in terms of this basic ambivalence.

The years between 1857 and 1869 were neither happy nor very eventful ones for Ghalib. During the revolt itself, Ghalib remained pretty much confined to his house, undoubtedly frightened by the wholesale massacres in the city. Many of his friends were hanged, deprived of their fortunes, exiled from the city, or detained in jails. By October 1858, he had completed his diary of the Revolt, the “Dast-Ambooh”, published it, and presented copies of it to the British

consisting mainly of petitions to patrons and government, including the British. Although very different in style and procedure, Ghalib's obsession with material means, and the accompanying sense of personal insecurity which seems to threaten the very basis of selfhood, reminds one of Bauldeaire. There is, through the years, the same self-absorption, the same overpowering sense of terror which comes from the necessities of one's own creativity and intelligence, the same illusion – never really believed viscerally – that if one could be released from need one could perhaps become a better artist. There is same flood of complaints, and finally the same triumph of a self which is at once morbid, elegant, highly creative, and almost doomed to realize the terms not only of its desperation but also its distinction.

Ghalib was never really a part of the court except in its very last years, and even then with ambivalence on both sides . There was no love lost between Ghalib himself and Zauq, the king's tutor in the writing of poetry; and if their mutual dislike was not often openly expressed, it was a matter of prudence only. There is reason to believe that Bahadur Shah Zafar, the last Moghul king, and himself a poet of considerable merit, did not much care for Ghalib's style of poetry or life. There is also reason to believe that Ghalib not only regarded his own necessary subservient conduct in relation to the king as humiliating but he also considered the Moghul court as a redundant institution. Nor was he well-known for admiring the king's verses. However, after Zauq's death Ghalib did gain an appointment as the king's advisor on matters of versification. He was also appointed, by royal order, to write the official history of the Moghul dynasty, a project which was to be titled "Partavistan" and to fill two volumes. The one volume "Mehr-e-NeemRoz", which Ghalib completed is an indifferent work, and the second volume was never completed, supposedly because of the great disturbances caused by the Revolt of 1857 and the consequent termination of the Moghul rule. Possibly Ghalib's own lack of interest in the later Moghul kings had something to do with it.

The only favourable result of his connection with the court between 1847 and 1857 was that he resumed writing in Urdu with a frequency not experienced since the early 1820's. Many of these new poems are not panegyrics, or occasional verses to celebrate this or that. He did, however, write many ghazals which are of the same excellence and temper as his early great work. Infact, it is astonishing that a man who had more or less given up writing in Urdu thirty years before should, in a totally different time and circumstance, produce work that is, on the whole, neither worse nor better than his earlier work. One wonders just how many great poems were permanently lost to Urdu when Ghalib chose to turn to Persian instead.

In its material dimensions, Ghalib's life never really took root and remained always curiously unfinished. In a society where almost everybody seems to have a house of his own, Ghalib never had one and always rented one or accepted the use of one from a patron. He never had books of his own, usually reading borrowed ones. He had no children; the ones he had, died in infancy, and he later adopted the two children of Arif, his wife's nephew who died young in 1852. Ghalib's one wish, perhaps as strong as the wish to be a great poet, that he should have a regular, secure income, never materialized. His brother Yusuf, went mad in 1826, and died, still mad, in that year of all misfortunes, 1857. His relations with his wife were, at best, tentative, obscure and indifferent. Given the social structure of mid-nineteenth-century Muslim India, it is, of course, inconceivable that *any* marriage could have even begun to satisfy the moral and intellectual intensities that Ghalib required from his relationships; given that social order, however, he could not conceive that his marriage could serve that function. And one has to confront the fact that the child never died who, deprived of the security of having a father in a male-oriented society, had had looked for material but also moral certainties – not certitudes, but certainties, something that he can stake his life on. So, when reading his poetry it must be remembered that it is the poetry of more than usually vulnerable existence.

It is difficult to say precisely what Ghalib's attitude was toward the British conquest of India. The evidence is not only contradictory but also incomplete. First of all, one has to realize that nationalism as we know it today was simply non-existent in nineteenth-century India. Second –one has to remember – no matter how offensive it is to some – that even prior to the British, India had a long history of invaders who created empires which were eventually considered legitimate. The Moghuls themselves were such invaders. Given these two facts, it would be unreasonable to expect Ghalib to have a clear ideological response to the British invasion. There is also evidence, quite clearly deducible from his letters, that Ghalib was aware, on the one hand, of the redundancy, the intrigues, the sheer poverty of sophistication and intellectual potential, and the lack of humane responses from the Moghul court, and, on the other, of the powers of rationalism and scientific progress of the West.

GHALIB - INTRODUCTION

Mirza Asadullah Beg Khan – known to posterity as Ghalib, a ‘nom de plume’ he adopted in the tradition of all classical Urdu poets, was born in the city of Agra, of parents with Turkish aristocratic ancestry, probably on December 27th, 1797. As to the precise date, Imtiyaz Ali Arshi has conjectured, on the basis of Ghalib’s horoscope, that the poet might have been born a month later, in January 1798.

Both his father and uncle died while he was still young, and he spent a good part of his early boyhood with his mother’s family. This, of course, began a psychology of ambivalences for him. On the one hand, he grew up relatively free of any oppressive dominance by adult, male-dominant figures. This, it seems to me, accounts for at least some of the independent spirit he showed from very early childhood. On the other hand, this placed him in the humiliating situation of being socially and economically dependent on maternal grandparents, giving him, one can surmise, a sense that whatever worldly goods he received were a matter of charity and not legitimately his. His preoccupation in later life with finding secure, legitimate, and comfortable means of livelihood can be perhaps at least partially understood in terms of this early uncertainty.

The question of Ghalib’s early education has often confused Urdu scholars. Although any record of his formal education that might exist is extremely scanty, it is also true that Ghalib’s circle of friends in Delhi included some of the most eminent minds of his time. There is, finally, irrevocably, the evidence of his writings, in verse as well as in prose, which are distinguished not only by creative excellence but also by the great knowledge of philosophy, ethics, theology, classical literature, grammar, and history that they reflect. I think it is reasonable to believe that Mulla Abdussamad Harmuzd – the man who was supposedly Ghalib’s tutor, whom Ghalib mentions at times with great affection and respect, but whose very existence he denies – was, in fact, a real person and an actual tutor of Ghalib when Ghalib was a young boy in Agra. Harmuzd was a Zoroastrian from Iran, converted to Islam, and a devoted scholar of literature, language, and religions. He lived in anonymity in Agra while tutoring Ghalib, among others.

In or around 1810, two events of great importance occurred in Ghalib’s life: he was married to a well-to-do, educated family of nobles, and he left for Delhi. One must remember that Ghalib was only thirteen at the time. It is impossible to say when Ghalib started writing poetry. Perhaps it was as early as his seventh or eight years. On the other hand, there is evidence that most of what we know as his complete works were substantially completed by 1816, when he was 19 years old, and six years after he first came to Delhi. We are obviously dealing with a man whose maturation was both early and rapid. We can safely conjecture that the migration from Agra, which had once been a capital but was now one of the many important but declining cities, to Delhi, its grandeur kept intact by the existence of the Moghul court, was an important event in the life of this thirteen year old, newly married poet who desperately needed material security, who was beginning to take his career in letters seriously, and who was soon to be recognized as a genius, if not by the court, at least some of his most important contemporaries. As for the marriage, in the predominantly male-oriented society of Muslim India no one could expect Ghalib to take that event terribly seriously, and he didn’t. The period did, however mark the beginnings of concern with material advancement that was to obsess him for the rest of his life.

In Delhi Ghalib lived a life of comfort, though he did not find immediate or great success. He wrote first in a style at once detached, obscure, and pedantic, but soon thereafter he adopted the fastidious, personal, complexly moral idiom which we now know as his mature style. It is astonishing that he should have gone from sheer precocity to the extremes of verbal ingenuity and obscurity, to a style which, next to Meer’s, is the most important and comprehensive styles of the ghazal in the Urdu language before he was even twenty.

The course of his life from 1821 onward is easier to trace. His interest began to shift decisively away from Urdu poetry to Persian during the 1820’s, and he soon abandoned writing in Urdu almost altogether, except whenever a new edition of his works was forthcoming and he was inclined to make changes, deletions, or additions to his already existing opus. This remained the pattern of his work until 1847, the year in which he gained direct access to the Moghul court. I think it is safe to say that throughout these years Ghalib was mainly occupied with the composition of the Persian verse, with the preparation of occasional editions of his Urdu works which remained essentially the same in content, and with various intricate and exhausting proceedings undertaken with a view to improving his financial situation, these last

From: hwhfac@umiami.ir.miami.edu
Subject: Collection of Ghalib' Ghazals
Date: 27 Oct 93 15:58:03 EDT

Hello fellow netters,

Here is a excellent work of Ghalib's Ghazals compiled by Mr. Prakash. I am posting the same for the benefit of the netters. Let's congratulate Mr. Prakash on the completion of this work which has taken considerable effort and time of his. I sincerely hope that many people will like it and I wish to congratulate and thank Mr. Prakash for his effort.

Thanx,

Waheed.

Dear Waheed,

Following is the completed compilation of Ghalib's ghazals. It took me a lot longer than I anticipated to complete the work. I will very much appreciate if you can post it on the nets on my behalf so that other ghazals lovers can enjoy it. I must thank you for your cooperation during the preparation of this document.

With Regards,
-Prakash

Dear Friends,

Here is a compilation of about 35 famous ghazals of Ghalib, along with the meanings of difficult urdu words. I have also included a short version of Ghalib's life story, provided to me by Rajiv Chakravarti of University of Texas. I would like to thank Rajiv for his suggestions and comments during the transliteration of the ghazals.

हैं और भी दुनिया में सुखनवर बोहोत अच्छे
कहते हैं कि "ग़ालिब" का है अन्दाज़-ए-बयाँ और

Enjoy !

-Prakash

P.N.Prakash
Physics Division,
Argonne National Lab,
Argonne, IL 60439

e-mail : Prakash@anlphy.phy.anl.gov
